ॐ

~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय।

कक्षा-नवम् विषय हिन्दी

दिनांक-25/06/2020 क्षितिज-गद्य-खंड

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

शुभ प्रभात,

आपके चेहरे पर हमेशा खुशियाँ ही खुशियाँ थिरकती रहे!

प्रिय छात्रों !कल आपने जाबिर हुसैन की रचना “सांवले सपनों की याद” के कुछ भाग पढ़ा था। आज, इस संस्मरण की अंतिम कड़ी इस प्रकार है।
~~~~

सांवले सपनों की याद

_जाबिर हुसैन

जटिल प्राणियों के लिए सालिम अली हमेशा एक पहेली बने रहेंगे ।बचपन के दिनों में ,उनकी एयरगन से घायल होकर गिरने वाली, नीले कंठ की वह गौरैया सारी जिंदगी उन्हें खोज के नए -नए रास्तों की तरफ़ ले जाती रही जिंदगी की ऊँचाइयों में उनका विश्वास एक क्षण के लिए भी डिगा। नहीं।वह लॉरेंस की तरह नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।

सालिम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।जो लोग उनके भ्रमणशील स्वभाव और उनकी यायावरी से परिचित हैं, उन्हें महसूस होता है कि वह आज भी पक्षियों के सुराग में ही निकले हैं और बस अभी गले में लंबी दूरबीन लटकाए अपने खोजपूर्ण नतीजों के साथ लौट आएँगे।

जब तक वह नहीं लौटते ,क्या उन्हें गया हुआ मान लिया जाए !

मेरी आंखें नम हैं, सालिम अली, तुम लौटोगे ना!

कठिन शब्दार्थ-:

- नैसर्गिक =स्वाभाविक
- शोख= चंचल
- शती= सौ वर्ष का समय
- यायावरी= घुमक्कड़

छात्र कार्य-:

कहानी का शुद्ध- शुद्ध वाचन करें एवं कठिन शब्दार्थ लिखकर याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी कुसुम